घीसू : मालूम होता है बचेगी नहीं। सारा दिन तो मजूरी करते बीता और नकद मिला भी नहीं। कल पर टाल गए नहीं तो दाई–वैद्य बुला लेता। तू जा जरा देखतो आ।

(माधव अलाव की ओर भूखी निगाह से देखता है और चिढ कर बोलता है।)

माधव : मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती! देख कर क्यां करूँ?

घीसू : तू बड़ा बेदर्द है बे! साल – भर जिसके साथ सुख चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई।

माधव : मुझसे तो उसका तड़पना और हाथ–पाँव पटकना नहीं देखा जाता।

(इस बीच घीसू आलू निकाल कर छीलना शुरु कर देता है।
माधव उधर ललचाई हुई नजरों से देखता है और बुदबुदाता है।)

माधव : (बुदबुदाते हुए) मुझे बुधिया के पास भेज कर बापू खुद सारा आलू चट कर जाना चाहता है।

(माधव भी एक आलू निकालने लगता है।)

घीसू : (माधव से) जाकर देखतो, क्या दशा है उसकी? लगता है बड़े कष्ट में है न जाने, कहीं चुड़ैल का फिसाद तो नहीं है। क्याा करें? यहाँ तो ओझा भी एक रूपया माँगता है।

माधव : (उसकी नजर आलू पर है।) जरूर यही बात है। मुझे तो वहाँ जाते हुए भी डर लगता है।

(दोनों आलू खा रहे हैं और साथ में बातचीत भी कर रहे हैं।)

घीसू : डर किस बात का है, मैं तो यहाँ हूँ ही।

माधव : तो तुम्हीं जाकर देखों न।

घीसू : मेरी औरत मरी थी तो मैं तीन दिन तक उसके पास से हिला तक नहीं था।

माधव : तो अब क्यों नहीं जाते।

घीसू : अरे मैं उस का ससुर हूँ। मुझसे लजाएगी कि नहीं। जिसका कभी मुँह नहीं देखा, आज उसका उधड़ा बदन देखूँ। उसे तन की सुध भी तो न होगी?

माधव : मैं सोचता हूँ. कोई बाल–बच्चा हुआ, तो क्या होगा? सोंठ, गुड़, तेल, कुछ भी तो नहीं है घर में।

घीसू : सब कुछ आ जाएगा। भगवान देंगे। जो लोग अभी एक पैसा नहीं दे रहे हैं, वे ही कल बुला कर रूपये देंगे। मेरे नौ लड़के हुए, घर में कभी कुछ नहीं था, भगवान ने किसी–न–किसी तरह बेड़ा पार लगाया।

(दोनों बेसब्री से आलू खाते हैं। जबाने जल रही थीं पर वे रूक नहीं रहे थे। आलू खाते–खाते घीसू को ठाकुर की बारात याद आई जिसमें उसने भरपेट भोजन किया था। वह माधव से इस की चर्चा करता है)

घीसू : ठाकुर की बारात नहीं भूलती। (चेहरे पर अतीत में खो जाने का भाव।)

माधव : (उत्सुकता जतलाते हुए) क्यों? क्या बात हुई थी उसमें।

घीसू : अरे तुम क्या जानो, लड़की वालों ने सबको भर पेट पूड़ियाँ खिलाई थीं, सबको। वह भोज नहीं भूलता।

माधव : (आश्चर्य का भाव चेहरे पर लाते हुए) अच्छा!

घीसू : (चेहरे पर बड़प्पन का भाव लाते हुए) छोटे–बड़े सब ने पूड़ियाँ खायीं और असली घी की। चटनी, रायता, तीन तरह के सूखे साग, एक रसेदार तरकारी, दही, चटनी, मिठाई; अब क्या बताऊँ उस भोज में क्या स्वाद मिला।

माधव : (आश्चर्य से) सारी चीजें सभी को दीं। फिर तो बड़ा मजा आया होगा!

घीसू : अब क्या बताऊँ कि उस भोज में क्या स्वाद मिला, कोई रोक–टोक नहीं, जो चीज चाहो माँगो, जितना चाहो, खाओ।

(माधव के चेहरे पर आश्चर्य और लालसा का भाव गहरा होता जाता है।
घीसू अपनी बात जारी रखता है)

घीसू : लोगों ने ऐसा खाया, ऐसा खाया, कि किसी से पानी न पिया गया। मगर परोसने वाले हैं कि पत्तल में गर्म–गर्म, गोल–गोल ..सुवासित कचौड़िया डाल देते हैं।

माधव : (आश्चर्य से) हाँ!

घीसू : जब सब ने मुँह धो लिया, तो पान इलाइची भी मिली। मगर मुझे पान लेने की कहाँ सुध थी? खड़ा न हुआ जाता था। चटपट जाकर अपने कम्बल पर लेट गया। ऐसा दिल––दरियाव था ठाकुर।

माधव : (कुछ दुखी होते हुए) अब हमें कोई ऐसा भोज नहीं खिलाता।

घीसू : (चेहरे पर थोड़ा नफरत और अवहेलना का भाव लाते हुए) अब कोई क्या खिलाएगा? वह जमाना दूसरा था। अब तो सब को किफायत सूझती है।

माधव : (उसका समर्थन करते हुए) और नहीं तो क्या।

घीसू : अब तो लोगों का व्यवहार ही बदल गया है। सादी – ब्याह में मत खर्च करो, क्रिया–कर्म में मत खर्च करो। पूछो गरीबों का माल – बटोर कर कहाँ रखोगे? बटोरने में तो कमी नहीं है। हाँ, खर्च करने में किफायत सूझती है।

माधव : (पुनः उत्सुकता और लालसा भाव के साथ) तुमने एक बीस पूरियाँ खायी होंगी।

घीसू : बीस से ज्यादा खायी थीं।

माधव : मैं पचास खा जाता।

घीसू : पचास से कम तो मैंने भी न खायी होंगी। अच्छा पट्ठा था। तू तो मेरा आधा भी नहीं है।

माधव : फिर भी मैं पचास खा जाता।

(दोनों जम्हाई लेते हैं। फिर पानी पीकर और अपनी धोतियाँ ओढ़कर और
पाँव पेट में डाल कर सो जाते हैं)

(दूर से बुधिया के कराहने की आवाज आती है पर इन दोनों पर
असर नहीं होता, खर्राटे भरने लगते हैं।)

—दृश्यांतर—

(सुबह का दृश्य। कोठरी के सामने एक ओर घीसू जमीन पर सो रहा है।
माधव कोठरी के भीतर से रोते चिल्लाते हुए बाहर आता है।)

माधव : (घीसू को जल्दी—जल्दी जगाते हुए) मर गई रे s s s। मर गई रे बापू s s s। ...... बुधिया मर गई s s s... बच्चा पेट में लेके मर गई रे s s s...

(घीसू हड़बड़ा कर उठता है और कुछ देर स्तब्ध सा माधव को देखता रह जाता है फिर भाग कर कोठरी की तरफ जाता है और अंदर झाँक कर जोर—जोर से हाय—हाय करते हुए छाती पीटने लगता है। माधव और जोर जोर से रोने लगता है।)

घीसू : (रोते हुए ही) हाय मर गई रे s s s... मेरे बच्चे को छोड़ कर चली गई s s s....बच्चा पेट में लेके मर गई रे s s s...

माधव : (साथ में ही जोर—जोर से रोते हुए) बुधिया मर गई रे s s s... हम लुट गये रे s s s... — हाय मर गई रे s s s... बच्चा पेट में लेके मर गई रे s s s

---

—दृश्यांतर—

(ज़मीदार साहब कुर्सी पर बैठे हुए हैं। घीसू — माधव रोते हुए
सामने थोड़ी दूर पर जमीन पर बैंठे हैं।)

जमींदार : (क्रोध और हिकारत से) क्या है बे घिसुआ, रोता क्यों है? अब तो तू कहीं दिखलाई भी नहीं देता. मालूम होता है, इस गाँव में रहना नहीं चाहता।

घीसू : (जमीन पर सिर रखकर और आँखों में आँसू भरे हुए) सरकार! बड़ी विपत्ति में हूँ। इसकी घर वाली रात को गुजर गई सरकार! हम दोनों उसके सिराहने बैठे रहे। दवा—दारू जो कुछ हो सका, सब कुछ किया, मुदा वो हमें दगा दे गई। ..... अब कोई एक रोटी देने वाला भी न रहा मालिक! तबाह हो गये। ...... घर उजड़ गया। आपका गुलाम हूँ अब आपके सिवा कौन उसकी मिट्टी पार लगाएगा। ...... हमारे हाथ में जो कुछ था, वह सब तो दवा — दारू में उठ गया। .... सरकार ही की दया होगी, तो उसकी मिट्टी उठेगी। आप ही का आसरा है मालिक!

(जमींदार नफरत के साथ मन में कुढ़ते हुए 'हुँह'' की आवाज के साथ उनकी तरफ दो—तीन सिक्के निकाल कर फेंक देता है और उठ कर चल देता है। घीसू—माधव जल्दी—जल्दी पैसे उठा लेते हैं।)

—दृश्यांतर—

(घीसू—माधव पर्दे के पीछे से मंच की तरफ आते हुए बातें कर रहे हैं।)

घीसू : (पैसे गिनते हुए) जमींदार से कुछ पैसे तो मिल गये। कुछ पैसे और थोड़ी लकड़ी का इंतजाम और हो जाता तो अभागी की मिट्टी उठ जाती।

(कुछ सोचते हुए) बापू साहूकार के यहाँ तो बहुत मेहनत–मजूरी की है। उसके यहाँ भी चलते हैं, कुछ तो मिल ही जाएगा।

घीसू : (सहमति में सिर हिलाते हुए) सही है बेटा वहीं कुछ घरों में लकड़ियाँ भी मांग लेंगे।

(दोनों पर्दे के पीछे की ओर चल देते हैं।)

–दृश्यांतर–

(बाजार का दृश्य। कपड़ा, पूड़ी–कलेजी और शराब की दुकान लगी है। घीसू–माधव एक ओर से बात करते हुए मंच पर आते हैं।)

घीसू : लकड़ी तो उसे जलाने–भर को मिल ही गयी है, क्यों माधव?

माधव : हाँ बापू, लकड़ी तो बहुत है, अब बस कफन चाहिए।

घीसू : तो चलो, कोई हलका–सा कफन ले लेते हैं। कफन के पीछे बहुत पैसे फूँकने से क्या फायदा।

माधव : हाँ, और क्या। लाश उठते–उठते रात तो हो ही जाएगी। रात को कफन कौन देखता है?

घीसू : चलो ये सामने ही दुकान है। देख लेते हैं कोई सस्ता वाला.....

(घीसू माधव कपड़े की दुकान के सामने जा कर ताक–झांक करते हैं)

दुकानदार: क्या चाहिए?

घीसू : (हिचकिचाते हुए) कफन चाहिए था। सस्ता वाला...

दुकानदार: कितना चाहिए?

घीसू : (माधव की ओर देखकर) कि..... कितना चाहिए होगा? कितना लगता है?

माधव : दो या तीन गज तो लगेगा ही। कम से कम।

घीसू : (दुकानदार से) तीन गज़ लगेगा सेठ। क्या भाव लगा रहे हो?

दुकानदार: एक गज का एक रुपया दो आना लगेगा। इस हिसाब से तीन गज़ का 3 रुपया छः आना हुआ। बोलो कितना निकालूँ?

(दोनों आपस में सलाह करते हैं, इधर–उधर ताकते–झांकते हैं और बड़बड़ाते हुए आगे बढ़ जाते हैं)

घीसू : (माधव से) कैसा बुरा रिवाज है, जिसे जीते जी तन ढांकने को चीथड़ा भी नसीब नहीं था, उसे मरने पर नया कफन चाहिए।

माधव : वैसे बापू कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है।

घीसू : और क्या रखा रहता है? यही पाँच रुपये पहले मिल जाते तो उसकी कुछ दवा–दारू कर देते। ऐसे तड़प कर तो न मरती। एक रुपये दो आने गज़ कपड़ा बेच रहे हैं... हुँह। (दोनों एक ओर बढ़ जाते हैं।)

–दृश्यांतर–

(घीसू–माधव एक तरफ से गंच पर आ रहे हैं। शाम हो चली है। दोनों मधुशाला के सामने रुक जाते। घीसू पैसे निकाल कर गिनता है। दोनों एक दूसरे की ओर देखते हैं, और घीसू मधुशाला की ओर बढ़ जाता है।)

घीसू : (दुकानदार से) सेठ जी, एक बोतल हमें भी देना।

(बोतल लेकर बाहर आता है)।

माधव : बापू, साथ में कुछ खाने के लिए भी रहता तो कितना अच्छा लगता।

घीसू : रुक, लेकर आता हूँ। तली मछली खायेगा?

माधव : कुछ भी ले आओ।

(घीसू दुकान से तली मछली और चिखौना लेकर आता है।)

घीसू : ले खा और कुल्हड़ में डाल कर पी।

(दोनों ताबड़ तोड़ पीते हैं और सुरूर में आ जाते हैं।)

घीसू : (दार्शनिक भाव से) कफन में पैसा लगाने से क्या मिलता? आखिर जल ही तो जाता। बहू के साथ तो नहीं जाता।

माधव : पर अभी तो सारा का सारा हमारे पेट में गया।

माधव : (आसमान की ओर देखकर) लेकिन बापू, दुनिया का दस्तूर है। नहीं तो लोग बॉभनों को हजारों रुपये क्यों दे देते हैं? कौन देखता है, परलोक में मिलता है या नहीं।

घीसू : बड़े आदमियों के पास धन है, फूँकें। हमारे पास फूँकने को क्या है?

माधव : लेकिन लोगों को क्या जवाब दोगे? लोग पूछेंगें नहीं, कि कफन कहाँ है?

घीसू : (हंसकर) अबे, कह देंगे कि रुपये कमर से खिसक गये बहुत ढूँढा, पर मिले नहीं। लोग विश्वास तो नहीं करेंगे, लेकिन रुपये फिर से वही देंगे।

(इस बात पर माधव भी हँसने लगा)

माधव : बड़ी अच्छी थी बेचारी! मरी भी तो खूब खिला–पिलाकर।

घीसू : (थोड़ा सोचकर) पूड़ियां खायेगा? रुक ले आता हूँ। थोड़ी कलेजी और चटनी–अचार भी साथ में लाता हूँ। बहुत भूख लग रही है।

(दुकान से ले आता है। दोनों शान से बैठ कर पूड़ियाँ खाते हैं।)

घीसू : तुझे कलेजी पसंद है ना?

माधव : हाँ, बहुत पसंद है, लेकिन फिर कभी मिलेगी कहाँ?

घीसू : (दार्शनिक भव से) आज मिली है तो जी भर कर खाले। हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या बहू को पुन्न न होगा?

माधव : (श्रद्धा से सिर झुकाकर) जरूर से जरूर होगा बापू। भगवान, तुम अन्तर्यामी

हो। उसे बैकुण्ठ ले जाना। हम दोनों हृदय से आशीर्वाद दे रहे हैं। आज जो भोजन मिला वह कभी उम्र– भर न मिला था।

(माधव थोडी देर सोचता है, फिर शंका के भाव से पूछता है)

माधव : एक बात पूछूँ बापू, हम लोग भी तो एक न एक दिन वहाँ जायेंगे ही? जो वहाँ हम लोगों से पूछेगी कि तुमने हमें कफन क्यों नहीं दिया तो क्या कहोगे?

घीसू : (चिढककर) कहेंगे तुम्हारा सिर!

माधव : देख लेना बापू वो पूछेगी जरूर।

घीसू : (चिढ़कर) तू कैसे जानता है कि उसे कफन न मिलेगा? तू मुझे ऐसा गधा समझता है? साठ साल क्या दुनिया में घास खोदता रहा हूँ? उसको कफन मिलेगा और बहुत अच्छा मिलेगा।

माधव : (अविश्वास से) अब कौन देगा? सारे रुपये तो तुमने चट कर डाले। वह तो मुझसे पूछेगी। उसकी माँग में सिंदूर तो मैंने डाला था। कौन देगा रुपये, बताते क्यों नहीं।

घीसू : (घृणा और आवेश के साथ) वही लोग देंगे, जिन्होंने अब की दिया है। दरवाजे पर लाश पड़ी रहेगी तो झख मारकर देंगे। यह और बात है कि अब की रुपये हमारे हाथ न आएँगें, पर लाश बिना कफन के नहीं उठने पायेगी। वही लोग फिर देंगे, तुम देख लेना।

(दोनों बची हुई पूड़ियाँ खाने लगते हैं। थोड़ी देर चुप्पी। सामने एक भिखारी को बैठा देखकर घीसू बची हुई पूड़ियों का पत्तल उसकी ओर बढ़ाता है।)

घीसू : (भिखारी से) पूड़ियाँ खायेगा। ले भर पेट खाले। खूब खा और आशीर्वाद दे! जिसकी कमाई है, वह तो मर गयी। मगर तेरा आशीर्वाद उसे जरूर पहुँचेगा। रोयें–रोयें से आशीर्वाद देना, बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे हैं।

माधव : (आसमान की ओर देखकर) वह बैकुण्ठ में जायेगी बापू, बैकुण्ठ की रानी बनेगी।

घीसू : (खड़ा होकर) हाँ, बेटा बैकुण्ठ में जाएगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं। मरते–मरते हमारी जिन्दगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गयी। वह न बैकुण्ठ जाएगी तो क्या ये मोटे–मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं, और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मन्दिरों में जल चढ़ाते हैं?

(थोड़ी देर दोनों शांत रहते हैं)

माधव : (दुखी होकर) मगर बापू, बेचारी ने जिन्दगी में बड़ा दुःख भोगा। (रोते हुए) कितना दुख झेल कर मरी बेचारी।

(आंखों पर हाथ रखकर चीख मार कर माधव रोता है)

घीसू : क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह माया–जाल से मुक्त हो गयी, जंजाल से छूट गयी। बड़ी भाग्यवान थी, जो इतनी जल्दी माया–मोह के बंधन तोड़ दिये।

(दोनों उसी सुरूर में खड़े होकर गाते हैं)

ठगिनी क्यों नैना झमकावे! ठगिनी।
कद्दू काट मृदंग बनावे, नींबू काट मजीरा,
पांच तरोई मंगल गावें, नाचे बालम खीरा।
रूपा पहिर के रूप दिखावे, सोना पहिर रिझावे
गले डाल तुलसी की माला, तीन लोक भरमावे।
ठगिनी क्यों नैना झमकावे।

समाप्त

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY